दिनांक 20 जनवरी, 2016 को राँची विश्वविद्यालय, राँची के 29वाँ दीक्षान्त समारोह में माननीया राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का अभिभाषण

दीक्षांत समारोह के इस महती अवसर पर आप सभी के मध्य सम्मिलित होकर अपार प्रसन्नता हो रही है। उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के जीवन के इस महत्वपूर्ण क्षण का मुझे साक्षी बनने में मुझे अद्भुत खुशी हो रही है।

आज का दिन उन विद्यार्थियों के लिए विशेष दिन है जिन्हें उपाधि प्रदान की जा रही है। अब तक आप विश्वविद्यालय के अंदर अपनी प्रतिभाओं को निखारने का काम कर रहे थे। आप सीख रहे थे कि विद्या कैसे मनुष्य के व्यक्तिव को निखार सकती है। आप शिक्षकों तथा दोस्तों के साथ तर्क–वितर्क कर अपनी बौद्धिक क्षमताओं को बढ़ा रहे थे। अब आप उस दुनिया में कदम रखने जा रहे हैं जहाँ आपको हर पल अपने को दक्ष सोबित करना होगा। यहाँ सीखे हुए गुणों, कौशलों के आधार पर आप अपने सपने, अपने परिवार के सपने को पूरा करेंगें। अपनी तार्किक शक्तियों के माध्यम से आप अपने लिए समाज में स्थान बनाएंगें। इस अविस्मरणीय अवसर पर मैं अपासे कहना चाहूँगी कि आपकी सफलता में सिर्फ आपका प्रयास, लगन तथा दृढ़ निश्चय का ही केवल हाथ नहीं है। आपकी सफलता में केवल आपके शिक्षकों तथा परिवार का ही

योगदान नहीं है। आपकी सफलता में पूरे समाज का योगदान है। पूरे समाज ने आपके अपने लक्ष्य तक पहुँचने में मदद की है। आप भाग्यशाली है कि आपको उच्च शिक्षा हासिल करने का अवसर प्राप्त हुआ। आप खुशनसीब है कि आपने ऐसे परिवार में जन्म लिया जो आपको पढ़ने का अवसर दे सका। आप जानते हैं कि झारखंड राज्य में हजारों ऐसे नौजवान हैं जो उच्च शिक्षा से वंचित है। आर्थिक कठिनाइयों के कारण वे पढ़ नही सके हैं। आज आपको ऐसे अथिवंचित लोंगो के बारे में सोचना चाहिए। यह सोचना चाहिए कि आपने जो शिक्षा प्राप्त की है उसके द्वारा समाज में कैसे बदलाव लाया जा सकता है। कैसे समाज को आर्थिक रूप से सुदृढ़ किया जा सकता है। सिर्फ अपने या अपने परिवार के बारे में ही अगर आप सोचेंगे तो मैं यह मानूंगी कि आपकी पढ़ाई अपूर्ण है। आपने पढ़ाई तो की लेकिन मनन नहीं किया।

शिक्षा जीवन के लिए सर्वोत्तम एवं महत्वपूर्ण उपहार है। इसके माध्यम से हम अपनी नैसर्गिक प्रतिभाओं में निखार लाते है तथा जीवन पथ पर सफलताओं को हासिल करते हैं।

प्रकृति ने झारखण्ड राज्य को भरपूर उपहार दिया है। खनिजों का यहाँ अकूत भंडार है। यहाँ के पेड़–पौधे, जीव–जन्तु विश्व प्रसिद्ध हैं। यह प्रदेश झरनों एवं जल

प्रपातों का प्रदेश है। इस राज्य में अनेक शांतिप्रिय जनजातियाँ निवास करती हैं जिनकी समृद्ध परम्पराओं पर हमें नाज है।

इन सब के बावजूद हम वैश्विक स्तर पर बहुत पिछड़े है। मानव विकास सूचकांक के आधार पर हम भारत के राज्यों में 19वीं पायदान पर हैं। प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता के बावजूद मानव विकास सूचकांक में इतना नीचे रहना एक विसंगति है। शिक्षा से इसे दूर किया जा सकता है। उच्च शिक्षा समाज को प्रभावित कर सकती है। झारखण्ड राज्य में उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात **(Gross Enrollment Ratio)** केवल **8.1%** है। इस सत्र से विश्वविद्यालय द्वारा द्वितीय पाली में विद्यार्थियों का नामांकन किया गया है, ताकि अधिक–से–अधिक विद्यार्थी स्नातकोत्तर की शिक्षा अर्जित कर सकें। मैं विश्वविद्यालय से अपेक्षा करती हूँ कि द्वितीय पाली में नामांकित विद्यार्थियों को भी वही सुविधाएँ उपलब्ध हों जो प्रथम पाली में नामांकित विद्यार्थियों को उपलब्ध हैं।

राँची विश्वविद्यालय राज्य का सबसे पुराना विष्वविद्यालय है। इस नाते मैं राँची विश्वविद्यालय पर अधिक दायित्व देना चाहती हूँ। मैं यह चाहती हूँ कि राँची विश्वविद्यालय भूमंडलीकरण तथा सूचना क्रांति के इस युग में

विद्यार्थियों के लिए एक ऐसी समग्र मॉडल तैयार करे जो विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बना सके। आज भारत के सैकड़ों नौजवान " स्टार्ट अप " कम्पनियों द्वारा अपने पैरों पर खड़े हैं तथा देश के विकास में सहायक बन रहे हैं। यहाँ के विद्यार्थियों को भी ऐसी राह दिखाने की आवश्यकता है। मेरा मानना है कि अगर राँची विश्वविद्यालय ऐसा मॉडल तैयार करता है तो राज्य के अन्य विश्वविद्यालय भी उसको अपनायेंगे।

विश्वविद्यालय में पठन–पाठन के साथ–साथ शोध का एक महत्वपूर्ण स्थान है। पारम्परिक शोध से हट कर कुछ और करने की आवश्यकता है जिससे इस विश्वविद्यालय की विशिष्ट पहचान देश में तथा विदेश में बने। राँची विश्वविद्यालय के इतिहास को देखने से पता चलता है कि इस विष्वविद्यालय की मानवशास्त्र तथा जनजातीय भाषा के क्षेत्र में विशेष पकड़ है। मुझे यह बताया गया है कि मानवशास्त्र विभाग तथा बेल्जियम के कैथोलिक विश्वविद्यालय के बीच शोध के करार हेतु प्रयास किया जा रहा है। मैं विश्वविद्यालय को इस बात के लिए बधाई देती हूँ। विज्ञान के क्षेत्र में भी विश्वविद्यालय का योगदान सराहनीय है। हाल में ही सम्पन्न 103वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस, जिसका उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री के द्वारा किया गया था, में राँची विश्वविद्यालय के दो सेवानिवृत

प्राध्यापक प्रो० पी० एन० पांडे तथा प्रो० जी० डी० मिश्रा दो अलग–अलग सत्र के अध्यक्ष थे। यह राज्य के लिए गौरव का विषय है।

केन्द्रीय विश्वविद्यालय की अपेक्षा राज्य द्वारा स्थापित विश्वविद्यालयों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। इससे गुणवत्ता पर असर पड़ता है। इस समस्या का समाधान ढूँढ़ा जा चुका है। ''राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान'' **(RUSA)** के माध्यम से राज्य द्वारा स्थापित विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालायों का सुदृढ़ीकरण किया जा रहा है। बड़े महाविद्यालय, जहाँ मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध है, उन्हें 'डीम्ड' विश्वविद्यालय का दर्जा दिये जाने का प्रयास किया जा रहा है। राँची विश्वविद्यालय का पुराना एवं प्रतिष्ठित महाविद्यालय ''राँची कॉलेज'' को डीम्ड विश्वविद्यालय का दर्जा देने हेतु प्रयासरत है। मैं विश्वविद्यालय को इस बात की बधाई देती हूँ। ''राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान'' में ससांधन प्राप्ति के लिए नैक **(National Assessment and Accreditation Council)** द्वारा मूल्यांकन बाध्यता है। मैं यह चाहूँगी कि राज्य के सभी विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालय इसके लिए समुचित कदम उठायें।

आज दीक्षांत समारोह में 47 स्वर्ण पदकों में से 39 स्वर्ण पदक छात्राओं को मिला है । यह न केवल लड़कियों में उच्च शिक्षा के प्रति ललक को दर्शाता है, बल्कि उनके अभिभावक की भी व्यापक मानसिकता को परिलक्षित करता है।

मैं आज उपाधि प्राप्त करने वाले सभी विद्याार्थियों को बधाई देती हूँ। आप प्रसन्न रहें तथा अपने व्यक्तिगत उत्कृष्टता तथा सामूहिक प्रयास से इस देश को और महान एवं सशक्त बनाएं। मैं आज इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार से जुड़े सभी सदस्यों को बधाई देती हूँ।

जय हिन्द!